घृतकुमारी (ग्वार पाठा)

Aloe Vera Mill

सदस्य सचिव

राज्य औषधीय पादप बोर्ड, हरियाणा

कार्यालय

मुख्य वन संरक्षक (परियोजनाएं),

वन विभाग, वन भवन, पंचकूला-134 109

दूरभाष : 0172-2566623

घृतकुमारी (ग्वार पाठा)
Aloe vera Mill

सामान्य वर्णनः

यह लिलीएसी कुल का बहुवर्षीय मासल पौधा है जिसकी ऊचांई 2–3 फुट तक होती है। इसका तना बहुत छोटा तथा जड़े भी झकड़ा होती है जो कि जमीन के अन्दर कुछ ही गहराई तक रहती है। मूल के ऊपर से काण्ड से पत्ते निकलते है। ये काण्ड को चारो ओर से घेरे रहते है। निकास के स्थान पर वर्ण श्वेत होता है जो धीरे–धीरे हरा हो जाता है। पत्ते मांसल, फलदार, हरे तथा एक से डेढ़ फुट तक लम्बे होते है। पत्तों की चौड़ाई 1 से 3 इन्च तक मोटाई आधी इन्च तक होती है। पत्ते आरम्भ में चौड़े जो अंतिम छोर पर जाकर नोंकदार हो जाते है। पत्तों के किनारों पर छोटे–छोटे कांटे जैसे होते है। पत्रधार पर छिद्र होता है जो भीतर की ओर होता है। पत्तो के बाहरी भाग व अन्दर के भाग पर सफेद–सफेद चिन्ह होते है। पत्तों के उभय पृष्ठ पर दृढ़ गाढ़ा अवरण लगा रहता है तथा पत्तों के अन्दर धृत के समान चमकदार मुदा होती है जिसमें कुछ हल्की गंध आती है तथा स्वाद में कड़वा होता है। पुराने पौधे के मध्य से लम्बा पुष्पध्वज निकलता है जिसपर रक्ताभ पीत वर्ण के पुष्प आते है। शीतकाल के अन्त में पुष्प व फल लगते है। फल का आकार केप्सूल की तरह का होता है। पत्तो को काटने पर एक पीले रंग का द्रव्य निकलता है जो ठण्डा होने पर जम जाता है जिसे ''कुमारी सार'' कहते है। आयुर्वेद में इसे घृतकारी के नाम से पहचानते है। वनस्पति शास्त्रियों ने इसे कई नामों से

नामांकित किया है। संस्कृत में घृतकारी, दीर्घ पत्रिका बहुपत्री, स्थूलदला, रसायनी, हिन्दी में घीक्वार, खारपाठा, बंगाली में कोमाटी, घृतकारी, मराठी में कोरफल, कोरकांड, गुजराती में कडवी कुंवार, तमिल में अंगनी कटलई, सिरकतारे, तेलगू में चिकलबंदी, फारसी में दरखन्ऐसिक; अरबी में मुसबर, उर्दु में घीक्वार तथा लैटिन भाषा में इसे एलोव वीरा कहते हैं। ग्वारपाठा मुख्यतः फलोरिडा, वेस्टइंडिज, मध्य अमेरिका तथा एशिया महाद्वीप में प्राकृतिक रूप से पाया जाता है। भारत में पूर्व में विदेश से लाया गया था लेकिन अब पूरे देश में खासकर शुष्क इलाकों में जंगली पौधों के रूप में मिलता है। भारत में इसकी खेती राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा हरियाणा के शुष्क इलाकों में की जाती है।

उपयोगः

आयुर्वेद के मतानुसार ग्वारपाठा कडुवा, शीतल, रेचक, धातु पिरवर्तक, मज्जावर्धक, कामोद्दीपक, कृमिनाशक और विषनाशक होता है। नेत्र रोग, अवूर्द, तिल्ली की वृद्धि यकृत रोग, वमन, ज्वर, खासी, विसर्ग, चर्म रोग, पित्त, श्वास, कुष्ठ, पीलियां, पथरी और व्रण में लाभदायक होता है। आयुर्वेद की प्रमुख दवायें जैसे घृतकारी अचार, कुमारी आसव, कुवारी याक, चातुवर्गभस्म, मंजी स्याडी तेल आदि इसके मुख्य उत्पाद है। प्रसाधन सामग्री के निर्माण में भी इसका उपयोग प्रमुख रूप में किया जाता है।

जलवायुः

ग्वारपाठे को मुख्यतः शुष्क व उष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। ये भारत के सभी क्षेत्रों में उगाया जा सकता है। इसे राजस्थान, गुजरात,

मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र तथा हरियाणा के शुष्क तथा कम वर्षा वाले क्षेत्रों में आसानी से उगाया जा सकता है।

भूमिः

हालांकि घृतकुमारी की खेती असिंचित तथा सिंचित दोनों प्रकार की भूमि में की जा सकती है परन्तु इसकी खेती हमेशा असिंचित भूमि पर ही करनी चाहिये। इसकी जड़ भूमि में अधिक गहरी नहीं जाती है। इसकी खेती के लिये मोटी रेत वाली दोमट कम उपजाऊ मिट्टी जिसका पी.एच. मान 8 तक हो उपयुक्त रहती है। भूमि में पानी के निकास के लिये उचित व्यवस्था होनी चाहिये।

भूमि तैयारी व खादः

वर्षा ऋतु से पहले खेत में एक दो जुताई 20–30 सै. मी. की गहराई तक पर्याप्त है। जुताई के समय 10–15 टन गोबर की खाद एकसार भूमि में अंतिम जुताई के साथ मिला देनी चाहिये।

बुवाई का समयः

इसकी बिजाई सिचिंत क्षेत्रो में सर्दी को छोड़कर पूरे वर्ष में की जा सकती है लेकिन इसका उपयुक्त समय जुलाई–अगस्त है।

बीज की मात्राः

इसकी बिजाई 3–4 महीने पुराने चार–पांच पत्तों वाले कंदों के द्वारा की जाती है। एक एकड़ भूमि के लिये करीब 14000 से 16000 कंदों / सकर्स की जरूरत होती है।

बीज प्राप्ति स्थानः खारपाठे का बीज निम्न स्थानों से प्राप्त किया जा सकता है:

1. जैन केमिकल्स एण्ड सीड सप्लायर्स, पटेल मार्किट, सुंदरवास, उदयपुर, राजस्थान।
2. किरण एरोमा एण्ड हर्ब्स, अजमेर रोड, सोडाला, जयपुर, राजस्थान।
3. राजस्थान एग्रो फोरेस्टरी कारपोरेशन जोधपुर, राजस्थान।
4. चौ. देवी लाल हर्बल पार्क, चुहड़पुर, यमुनानगर, हरियाणा।
5. किसानों से जिन्होंने पूर्व में इसकी खेती की हो।

रोपण विधिः

इसके रोपण के लिये खेत में खूड़ (रिजेज एण्ड फरोज) बनाये जाते है एक मीटर में इसकी दो लाइंने लगेंगी तथा फिर एक मीटर जगह खाली छोड़ कर पुनः एक मीटर में दो लाइनें लगेंगी। यह एक मीटर की दूरी ग्वारपाठे काटने, निलाई गुडाई करने में सुविधाजनक रहता है। पुराने पौधे के पास से छोटे पौधे निकालने के बाद पौधे के चारो तरफ जमीन को अच्छी तरह दबा देना चाहिये। खेत में पुराने पौधों से वर्षा ऋतु में कुछ छोटे पौधे निकलने लगते है। इनको जड़ सहित निकालकर खेत में पौधारोपण के लिये काम में लिया जा सकता है।

सिंचाईः

बिजाई के तुरन्त बाद एक सिंचाई करनी चाहिये बाद में आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहना चाहिये।

निराई/गुडाईः

फसल बिजाई के एक मास बाद पहली निलाई गुडाई करनी चाहिये। 2–3 गुडाई प्रति वर्ष बाद में करनी चाहिये तथा समय–समय पर खरपतवार निकालते रहना चाहिये।

कीट व बीमारियांः

मुख्यतः इस फसल पर किसी तरह के कीटों एवं बीमारी का प्रकोप नहीं पाया गया है। कभी–कभी दीमक का प्रकोप हो जाता है।

फसल की कटाईः

पौध उगाने के एक वर्ष बाद ही तीन पत्तियों को छोड़कर शेष सभी पत्तियों को तेज धारदार हांसिसे से काट लिया जाता है।

उपजः

प्रति वर्ष एक एकड़ से घृतकुमारी के 20000 कि. ग्रा. ताजा पत्ते प्राप्त किये जा सकते है।

बाजार भाव व बिक्रीः

ताजा पत्ती का वर्तमान भाव बाजार में 2–5 रू. प्रति कि. ग्राम है। इन पत्तों को ताजा अवस्था में आयुर्वेदिक दवाईयां बनाने वाली कम्पनियां तथा प्रसाधन सामग्री निर्माताओं को बेचा जा सकता है। इन पत्तों से मुसब्बर अथवा एलोवासार बनाकर भी बेचा जा सकता है।

ग्वारपाठे की खेती से विशेष लाभः

1. बेकार पड़ी भूमि व असिंचित भूमि में बिना किसी विशेष खर्च के इसकी खेती कर लाभ कमाया जा सकता है।
2. इसकी खेती के लिये खाद, कीटनाशक व सिंचाई की कोई विशेष आवश्यकता भी नहीं होती है।
3. कोई जानवर इसको नहीं खाता। अतः इसकी रखवाली की आवश्यकता नहीं होती।
4. यह फसल हर वर्ष पर्याप्त आमदनी देती है।
5. इस खेती पर आधारित एलुवा बनाने, जैल बनाने व सूखा पाउडर बनाने वाले उद्योगों की स्थापना की जा सकती है। इस तरह इसके सूखे पाउडर व जैल की विश्व बाजार में व्यापक मांग होने के कारण विदेशी मुद्रा अर्जित की जा सकती है।

अनुमानित आय-व्यय विवरण प्रति एकड़ रूपयों में

व्यय :

1.	जमीन की तैयारी	2000
2.	बीज	48000
3.	बुवाई	3000
4.	खाद व सिचाई, निलाई / गुड़ाई	2000
5.	फसल कटाई व अन्य व्यय	5000
	कुल व्यय	**60000**

आयः

एक वर्ष बाद प्रति पौधा से 5 किलो पत्तियां प्राप्ति पर कुल भाव 5 रु. प्रति कि. ग्रा. के हिसाब से कुल आय = 2,50,000 रु.

शुद्ध लाभ = 2,50,000–60000 = 1,90,000 रु. प्रति एकड़

घृतकुमारी (ग्वार पाठा)

Best Golden Offset Printers Mob.: 9810490882